



वार्षिक हिंदी पत्रिका

प्रतिभा

संयुक्त अंक - 2
वर्ष - 2022



प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) आंध्र प्रदेश एवं प्रधान महालेखाकार
(लेखा परीक्षा) आंध्र प्रदेश का कार्यालय, विजयवाड़ा-520002.



सत्यमेव जयते

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) आंध्र प्रदेश का कार्यालय
एवं
प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) आंध्र प्रदेश का कार्यालय
विजयवाड़ा-520002

वार्षिक हिंदी पत्रिका
प्रतिभा
संयुक्त अंक - 2

मुख्य संरक्षक: श्री चंद्र मौली सिंह - प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक)
प्रधान संपादक: श्री जितेंद्र नाथ शर्मा - वरि. उपमहालेखाकार (प्रशासन)
सलाहकार संपादक: श्रीमती एल.आर. सत्या - वरि. लेखा अधिकारी (प्रशासन)
संपादक: श्री फूल सिंह, वरि. हिंदी अनुवादक
टंकण सहयोग: श्रीमती प्रियंका, डी.ई.ओ., ग्रेड "ए"

अनुक्रमणिका

गृहमंत्री का संदेश
प्रधान महालेखाकार का संदेश
मुख्य संरक्षक का संदेश
प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा) का संदेश
प्रधान संपादक का संदेश
संपादकीय
पाठकों की प्रतिक्रिया

क्र.सं.	लेख/कहानी	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
1	सकारात्मकता-कोरोना का बेहतरीन उपचार	देवनाथ मिश्रा, व.ले.प.	16
2	जीवन का मुल्य	आई.वी.लक्ष्मी, भूतपूर्व व.ले.प.अ.	20
3	लॉकडाउन के दिन	श्याम किशोर सिंह, स.ले.प.अ.	21
4	विजयवाड़ा एक नज़र में	फूल सिंह, वरि. अनुवादक	23
5	खोट खोजने से बचें	विजय कुमार शुक्ला, स.ले.प.अ.	25
6	बेटा विदेश में	फूल सिंह, वरि. अनुवादक	26
7	अगर आप सोचते हैं कि	विजय कुमार शुक्ला, स.ले.प.अ.	36
8	कुछ प्रेरणादायक वाक्य	विजय कुमार शुक्ला, स.ले.प.अ.	37
	कविताएं		
9	इतिहास की परीक्षा	गीताँजली कुमारी, लेखाकार	39
10	पथ के हमराही	गीताँजली कुमारी, लेखाकार	41
11	हरा पत्ता	शशांक सिंह, लेखाकार	42
12	पर्वतों से आगे	शशांक सिंह, लेखाकार	44
13	युद्ध	चंद्रपाल वर्मा, लेखाकार	45
14	कोरोना तेरी हस्ती हम मिटायेंगे	श्याम किशोर सिंह, स.ले.प.अ.	46
15	सरहद के योद्धा	चंद्रपाल वर्मा, लेखाकार	48
16	बचपन बिन बचपन	सौरभ तोमर, डी.इ.ओ.	49
17	अभिलाषा	प्रियंका, डी.इ.ओ.	50
18	जिंदगी	जितेंद्र नाथ शर्मा, व.उ.म.ले(प्रशा.)	51
19	खुश रहना	जितेंद्र नाथ शर्मा, व.उ.म.ले (प्रशा.)	52
20	हिंदी के सामान्य मुहावरे		53

मुख्य पृष्ठ : गौतम बुद्ध प्रतिमा, अमरावती, विधानसभा सचिवालय, अमरावती

पिछला पृष्ठ : रुषीकोंडा बीच, विशाखापट्टनम

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA



प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

“मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।”

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलतः इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियों को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

“जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।”

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल ‘कंठस्थ’ को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए ‘लीला हिंदी ऐप’- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप तथा ‘ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप’ भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह ‘प्र’ की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह ‘प्र’ की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूँ कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021


(अमित शाह)





बसंदेश

कार्यालय की हिंदी पत्रिका” प्रतिभा” के दूसरे अंक का प्रकाशन करने पर मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। “ग” क्षेत्र में हिंदी पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में एक सराहनीय पहल है। सर्वप्रथम, हिंदी पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देती हूँ। मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के उत्थान सहित कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी के प्रति रुचि में वृद्धि करने का प्रयास करेगी। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो पूरे देश में बोली और समझी जाती है। मैं आशा करती हूँ कि कार्यालय के सभी अधिकारी/कर्मचारी दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग कर इसके गौरव को बढ़ाएंगे।

कार्यालय की यह पत्रिका सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, यही मेरी शुभकामना है।

हस्ता/-

(लता मल्लिकार्जुना)

प्रधान महालेखाकार



मुख्य संरक्षक की कलम से....✍

कार्यालय की हिंदी पत्रिका” प्रतिभा” के दूसरे अंक का प्रकाशन करने पर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारी एवं कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। हिंदी पत्रिकाओं के माध्यम से अधिकारियों/कर्मचारियों को अपनी अभिव्यक्ति करने का अवसर मिलता है।

हिंदी पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मचारियों को मैं बधाई देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि कार्यालय के सभी अधिकारी/कर्मचारी अपने कार्यालयीन दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग कर इसके गौरव को बढ़ाएं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

हस्ता/-
(चंद्र मौली सिंह)
प्रधान महालेखाकार



संदेश

इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका “प्रतिभा” के दूसरे अंक का प्रकाशन करने पर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। संपादक मंडल के सभी सदस्यों और रचनाकारों को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ।

राजभाषा हिंदी के उत्थान में हिंदी पत्रिकाओं का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। वर्तमान में हिंदी के प्रयोग में दिन-प्रतिदिन प्रगति हो रही है। हिंदी पत्रिकाओं के माध्यम से कार्मिकों को अपनी वैचारिक अभिव्यक्ति व अपने अंदर छुपी हुई प्रतिभा को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है मैं कार्यालय के सभी कार्मिकों को अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने एवं इसका संवर्धन करने का अनुरोध करती हूँ।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी शुभ कामनाएं।

हस्ता/-

(इंदु अग्रवाल)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



संदेश

प्रधान संपादक की कलम से.....

इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका “प्रतिभा” के दूसरे अंक का प्रकाशन करने पर सर्वप्रथम पत्रिका परिवार के समस्त सदस्यों और रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में अपना सहयोग दिया है।

सरकारी कार्यालयों में हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना और अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी के प्रति आकृष्ट करना है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं का अपना स्थान है। हिंदी पत्रिकाएं अधिकारियों/कर्मचारियों की वैचारिक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आप सभी का सहयोग इसी प्रकार मिलता रहेगा।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी शुभ कामनाएं।

(जितेन्द्र नाथ शर्मा)

वरि. उपमहालेखाकार (प्रशासन)



संपादकीय

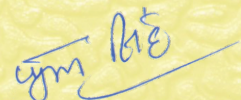
कार्यालय की हिंदी पत्रिका “प्रतिभा” का दूसरा अंक प्रकाशित करने पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। सर्वप्रथम, पत्रिका के प्रकाशन हेतु रचनाएं उपलब्ध करवाने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ। मैं उन सभी पाठकों का भी बहुत आभारी हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रथम अंक के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया दे कर इस अंक को और अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायता की है।

भाषा किसी भी राष्ट्र की पहचान और भावनात्मक एकता का आधार होती है। पारस्परिक सद्भाव और सौहार्दपूर्ण संबंधों को सुदृढ़ करने में देश की भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित करने में हिंदी पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। ये पत्रिकाएं कार्मिकों को वैचारिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती हैं। किसी भी देश की उन्नति के लिए अपनी भाषा का होना अति महत्वपूर्ण है जिसे हिंदी बखूबी निभा रही है। सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग में बहुत सुविधा हुई है। वर्तमान में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए बहुत से ई-टूल्स जैसे कंठस्थ, लीला, ई-महाशब्दकोष इत्यादि उपलब्ध हैं जिनके उपयोग से हिंदी में कार्य करना सरल हो गया है। हिंदी हमारे देश की राजभाषा है जिसका प्रचार-प्रसार करना हम सब का कर्तव्य है। पत्रिका में कार्यालय की गतिविधियों व अन्य कार्यकलापों के साथ राजभाषा के कार्यान्वयन की झलक भी मिलती है।

मैं कार्यालय के उन सभी कार्मिकों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन हेतु हर तरह से सहयोग दिया। पत्रिका का प्रकाशन अविरल रूप से चलता रहे यह मेरी शुभकामना है।

आपका शुभाकांक्षी,


(फूल सिंह)

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त प्रशंसनीय पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची

आपके कार्यालय से प्रकाशित वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका “प्रतिभा” वर्ष 2021 के प्रथम अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी प्रकोष्ठ

कार्यालय प्र. महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका प्रतिभा का वर्तमान प्रथम अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं। श्री फूल सिंह का लेख ‘गलती किस की’ तथा सुश्री एम.आर.लक्ष्मी का ‘सकरात्मक विचार’ वर्तमान तनावपूर्ण परिस्थितियों के विपरीत एक सबल मानसिक आधार की नींव हैं।

शशांक सिंह की ‘मजदूर’ सुरेंद्र कुमार द्वारा रचित ‘वो तकदीर अपनी थी’ एवं जितेन्द्र नाथ शर्मा की ‘तेरी याद में’ समस्त कविताएं सहज अभिव्यक्ति तथा भाषिक सौंदर्यता से गुजरते हुए मन-मस्तिष्क को तरोताजा अवस्था में स्थापित करती हैं।

हम आपके प्रथम प्रयास से प्रकाशित प्रतिभा में आगामी प्रतिभाओं का स्वागत करते हुए एक सफल भविष्य की अपेक्षा रखते हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हिंदी कक्ष)

महालेखाकार का कार्यालय (लेखा व हकदारी)-I, महाराष्ट्र

आपके पत्र सं. प्र.म.ले. (ले. व ह.) आं प्र/ रा.भा.अ./पत्रिका/2020-21 दिनांक 09/03/2021 के साथ 'प्रतिभा' के प्रथम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, तद्हेतु धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में श्री फूल सिंह द्वारा रचित 'गलती किस की' (कहानी) जीवन की हर परिस्थिति में सकारात्मक रहते हुए आने वाली परिस्थितियों का हिम्मत से मुकाबला करने का संदेश देती है व एम.आर.लक्ष्मी द्वारा रचित 'माँ' (कविता) व 'सकारात्मक विचार' (लेख) भी स्मृति पटल पर अपनी छाप छोड़ जाती हैं। श्री सुरेंद्र कुमार द्वारा रचित 'वो तकदीर अपनी थी' तथा 'उड़ान की दास्तां' तथा पत्रिका में प्रकाशित अन्य लेख, कहानी, कविताएं रोचक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ मनमोहक है।

पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन के लिए संपादन मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आगामी अंक के लिए अनेकोएक शुभकामनाएँ।

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/राजभाषा

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बंगलोर-560001

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "प्रतिभा" के वर्ष 2021 के प्रथम अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। सभी लेख पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

हस्ता/-

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय की पत्रिका “प्रतिभा” के प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई एतदर्थ आभार। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे तो सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं पर विशेष रूप से श्री फूल सिंह की ‘राजभाषा हिन्दी की सार्थकता’ एवं सुश्री एम. आर. लक्ष्मी की ‘सकारात्मक विचार’ बेहद प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है।

कविताओं में श्री जितेंद्र नाथ शर्मा की ‘तेरी याद में’ एवं श्री शशांक सिंह की ‘मजदूर’ काफी अर्थपूर्ण एवं रोचक हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

हस्ता/-

हिन्दी अधिकारी/प्रशा.हिन्दी सेल

महालेखाकार(लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री शशांक सिंह, डी.ई.ओ. की कविता ‘मजदूर’ श्री फूल सिंह वरि. हिंदी अनुवादक का लेख ‘राजभाषा हिंदी की सार्थकता’ तथा सुश्री एम.आर. लक्ष्मी, वरि. लेखाकार का लेख ‘सकारात्मक विचार’ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, बिहार, पटना

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्र क्र.-प्र.म.ले.(ले. व ह.) आं प्र/रा.भा.आ./पत्रिका/2020-21/306312 दिनांक 28/05/2021 के द्वारा हिंदी पत्रिका प्रतिभा के प्रथम अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षिक करता है। श्री सुरेंद्र कुमार की रचना 'सच्चा ज्ञान' श्री दिवाकर दहिया की रचना 'जीवन-सत्त्व' एवं श्री जितेन्द्र नाथ शर्मा की रचना 'तेरी याद में' काफी रोचक, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखा अधिकारी,(हिन्दी कक्ष)

महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी) जम्मू व कश्मीर के कार्यालय

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'प्रतिभा' के प्रथम अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। 'प्रतिभा' परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए 'चिनार ध्वनि' परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं।

हस्ता/-

वरि. लेखा अधिकारी(हिंदी)

लेखा व हकदारी, श्रीनगर

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800001

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "प्रतिभा" के प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद और बधाई। पत्रिका के इस प्रवेशांक की विषय सामग्री, आवरण-सज्जा और मुद्रण अत्यंत उत्कृष्ट और स्तरीय है। सम्पादक मण्डल ने इस अंक में पठनीय एवं सारगर्भित रचनाओं को संकलित किया है।

'राजभाषा हिंदी की सार्थकता', 'प्रदूषण एक समस्या' सकारात्मक विचार 'जिद्द' औरत शीर्षक रचनाएँ विशेष रूप से पठनीय हैं।

अहिन्दी भाषी क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रतिभा का प्रकाशन अत्यंत प्रशंसनीय है। पत्रिका भविष्य में भी राजभाषा की प्रगति के अभियान को और सशक्त बनाए इसी कामना के साथ समस्त पत्रिका परिवार को पुनः बधाई और शुभकामनाएं।

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, प्लॉट नं, 5,

सेक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160020

आपके पत्र संख्या: प्र.म.ले. (ले. व ह.)/आं.प्र./रा.भा.अ./पत्रिका/2020-21/जी.एन.306416 दिनांक 01.06.2021 के द्वारा हिंदी पत्रिका 'प्रतिभा' के प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। 'मां' 'मजदूर' 'राजभाषा हिंदी की सार्थकता' 'उड़ान की दास्तां' 'औरत' एवं 'परिवर्तन की आस में दम तोड़ती अंतिम सांसें' आदि रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायक हैं। रचनाओं के चयन में संपादक मंडल की कुशलता एवं साहित्यिक समझ सराहनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

(हिंदी कक्ष)

सकारात्मकता: कोरोना का बेहतरीन उपचार



देवनाथ मिश्रा

वरिष्ठ लेखा परीक्षक

भूतपूर्व कोरोना पाज़िटिव की कलम से :-

दाहिने सीने में थोड़ा थोड़ा दर्द महसूस हो रहा था। दो-तीन दिन तक तो मैंने ध्यान नहीं दिया लेकिन जब दर्द बंद नहीं हुआ तो अंततः मैंने डॉक्टर को दिखाने का फैसला किया तो उन्होंने फटाफट सी. टी स्कैन चेस्ट और अल्ट्रासाउंड लिख दिया। रिपोर्ट आयी....सब कुछ नॉर्मल था डॉक्टर ने सुझाव दिया एक बार आप कोरोना (कोविड-19) टेस्ट करवा लीजिए और उसी दिन हॉस्पिटल से शाम को घर पहुंचा ही था कि मुझे बुखार भी आ गया और उसके 2 दिन बाद मैंने अपना टेस्ट करवाया....रिपोर्ट कोरोना पाज़िटिव थी।

रिपोर्ट देखकर मैं सामान्य था। बस मैंने दो काम सबसे पहले किए। 1. उपचार शुरू करना और 2. सोशल मीडिया जैसे- फेसबुक, वाट्सएप से दूरी (बिल्कुल अलग भी नहीं) तथा न्यूज़ देखना या पढ़ना पूरी तरह से बंद कर देना। क्योंकि मुझे पता था की पहले वाला तभी काम करेगा जब दूसरे वाले से जितना अधिक दूरी होगी क्योंकि दूसरा वाला कोरोना से बहुत ज्यादा खतरनाक है और जो सीधे दिल और दिमाग पर हमला करता है। जैसे- जैसे लोगों को पता चलता गया लोगों ने व्हाट्सएप, फेसबुक, फोन और अन्य माध्यमों से मुझसे सम्पर्क करना शुरू कर दिया और देखते ही देखते सुझाव, संदेश और सतर्क करने की बाढ़ सी आ गई। सबके अपने अपने सुझाव होते थे।

ऐसे लोगों को मैं 3 श्रेणियों में रखता हूं- पहला- जो लोग बोलते थे घबराना नहीं है, कोई बात नहीं है, जल्दी ही ठीक हो जाओगे।

दूसरा- जो लोग रोग या कोरोना की बात ही नहीं करते थे। वह केवल हमारे जीवन से संबंधित उपलब्धियों और अन्य बातों की चर्चा करते थे जिसमें केवल और केवल सकारात्मकता और सुखद अनुभूति भरी होती थी।

तीसरा- ऐसे लोग जो कोई सनसनी खबरें भेजते थे जैसे- ध्यान से देखिए कैसे कोरोना के मरीज ने हॉस्पिटल के बाहर तड़प-तड़प कर दम तोड़ दिया, अस्पतालों में जगह नहीं मिल पा रही है, श्मशान में लंबी लाइन लगी हुई है।

उपरोक्त तीनों श्रेणियों में से अगर आपके पास पहली और दूसरी कैटेगरी वाले हित-मित्र/सगे-संबंधी हैं तो आप भाग्यशाली हैं और अगर आपके पास तीसरी कैटेगरी वाले लोग हैं तो फिर भगवान ही आपके मालिक हैं। वास्तव में कोरोना(SARS-COV-19) भी एक फ्लू है जो अन्य वायरस की तरह सर्दी और जुकाम पैदा करता है इससे अधिक कुछ भी नहीं। लेकिन यदि इसका आप समय पर और सही ढंग से उपचार नहीं करेंगे तो शरीर में डिस्टर्बेंस होना शुरू हो जाएगा ठीक उसी तरह जैसे अगर आपको कोई चोट लग जाए और आपने उसका सही समय पर और सही ढंग से उपचार नहीं किया तो वह नासूर बन सकता है, सड़न पैदा कर सकता है। निजी कंपनियों और न्यूज़ चैनलों ने इसकी ब्रांडिंग इस कदर की है कि लोग हार्ट फेल्योर को इतना बड़ा नहीं मान रहे हैं जितना बड़ा कोरोना को। यह सब देख सुन कर मुझे एक कहानी याद आ जाती है जिसमें एक वृद्ध महिला कहती हैं कि जितना डर शेर से नहीं लगता उतना टपका (बारिश की बूंदें) से लगता है।

मीडिया जब भी रिपोर्ट करती है तो यही दिखाती है यह देखिए आज भारत ने अमेरिका को पीछे छोड़ दिया.... ऐसा लगता है जैसे यह कोई ओलंपिक चल रहा है या प्रतिस्पर्धा हो रही है कि कोई किसी को पीछे छोड़ रहा है और कोई आगे निकल रहा है। हद है ऐसी रिपोर्टिंग की, ऐसी भाषा की, ऐसी मर्यादा की जो इस देश के नागरिकों के दिलों और दिमाग में इस तरह ठूस ठूस कर डाली जा रही है जिससे निकलना मुश्किल हो, जिससे आदमी की हार्टबीट, ब्लड प्रेशर, बेचैनी, घबराहट इतनी बढ़ जाती है कि कोरोना कहीं बहुत पीछे छूट जाता है और यह सब चीजें आगे निकल जाती हैं और आदमी की मृत्यु कोरोनावायरस से तो नहीं बल्कि इन सबसे जरूर हो जाती है। मेरी इन बातों को पढ़ने के बाद बहुत से पत्रकार मित्र व समाज के अन्य लोग तर्क और दलील देने लगेंगे कि जो सच है उसको तो दिखाना ही पड़ेगा लेकिन अपने जीवन में अपने श्रेष्ठ गुरुजनों जिसमें से लोकमान्य ग्रामोद्योग इंटर कॉलेज नरियांव, फतेपुर के आदरणीय गुरु श्री रमाशंकर दुबे से मैंने यही सीखा है *सत्यम ब्रूयात प्रियं* *ब्रूयात ना ब्रूयात सत्यम* *अप्रियम* सच बोलिए लेकिन ऐसा सच मत बोलिए जो अप्रिय हो सच तो बहुत कुछ है सच वही अच्छा है जो कल्याणकारी हो, जो लोगों को सुकून दे, जो लोगों में आत्मीयता की भावना भर दे, जो लोगों का डर खत्म कर दे और आज इस सत्य की जरूरत है कि कोरोना सिर्फ और सिर्फ एक सर्दी जुकाम लाने वाला फलू है इस से बढ़कर कुछ नहीं, जो आएगा और फिर 10 दिन बाद 15 दिन बाद वापस चला जाएगा।

इस महामारी के समय में लोगों का विश्वास टूटा है ..नहीं; नहीं; यह चकनाचूर हो गया है जिस हॉस्पिटल में पहुंचते ही मरीज का आत्मविश्वास बहुत ऊंचा हो जाता था, उसे जीवन की एक उम्मीद दिखाई पड़ने लगती थी उस हॉस्पिटल में जाकर भी उसका सुकून छिन गया उसके मन में डर बैठ गया। रिपोर्ट में यह तो बताया जाता है कि कोरोना से 10 लोग मर गए लेकिन यह जानबूझकर कभी नहीं बताया जाता है कि वह 10 लोग पहले से ही किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित थे।

आइए हम सब मिलकर एक संकल्प लेते हैं...कहीं और से नहीं बल्कि कोरोना से ही सीखते हैं- जब एक वायरस के हमारे अंदर आ जाने से हमारी रिपोर्ट पॉजिटिव आ सकती है तो हमारे पास तो पहले से ही ऐसी बहुत से अनमोल उपलब्धियां और लोग हैं जिससे हम अपने मन और सोच की रिपोर्ट को इतना अधिक पॉजिटिव बना सकते हैं कि उस पॉजिटिविटी में कोरोना की पॉजिटिविटी शून्य हो जाए और यहीं पर डार्विन का सिद्धांत लागू हो जाएगा "सर्वाइवल आफ द फिटिस्ट" और वही सरवाइव करेगा जिसकी पॉजिटिविटी सबसे श्रेष्ठ होगी। अब आपको निश्चय करना है कि वह कोरोना की होगी या आपके मन और सोच की। भविष्य में हमारा सगा-संबंधी, हमारे समाज के लोग चाहे कोई भी हो यदि कोरोना पॉजिटिव होते हैं तो हम उनको समाचार की कटिंग या लिंक या फेसबुक, व्हाट्सएप का फ़ालतू का ज्ञान ना भेजें ना उसकी चर्चा करें कि फलाने कोरोना से मर गए, और बहुत हाहाकार मचा हुआ है, श्मशान में लाइन लगी हुई है इत्यादि। आप यकीन मानिए कि वह आदमी 10 दिन में कोरोनावायरस से ठीक हो जाएगा इस जंग से जीत जाएगा लेकिन जिस दिन आप उसे पूरा ब्यौरा बताएंगे उसके जीवन का वही अंतिम दिन होगा। कोरोना का पूरा गणित मनोवैज्ञानिक है और इसी समाज के लोगों द्वारा जबरदस्ती लोगों के दिमाग में डर भरा गया है।

अगर मृत आत्माएं कहीं भटक रहीं हों और उनसे कह दिया जाए कि आप लोगों को कोरोनावायरस ने मार दिया तो उनमें से अधिकांश का यही जवाब होगा कि मुझे कोरोना ने नहीं बल्कि इस समाज के गैर जिम्मेदार लोगों ने मार दिया।

जीवन का मूल्य

हमने हमेशा सुना कि जीवन एक संघर्ष है। पर इस संघर्ष के चलते जो सकारात्मक सीख हमें मिलती है वो अमूल्य है। हमें इस जीवन में अपने कर्तव्य के साथ-साथ इस समाज के लिए भी कुछ करना चाहिए।

बचपन में हम जल्दी बड़ा होना चाहते हैं, यह सोचकर कि कोई रोक-टोक नहीं होगी और हम अपनी ज़िंदगी जैसे जीना चाहते हैं वैसे जिएंगे।

जब बड़े हो जाते हैं और सब कुछ अपने आप संभालना पड़ता है तो लगता है जल्दी यह दौर भी खत्म हो जाएगा और जब मैं कमाने लगूँगा तो ज़िंदगी बेहतर हो जाएगी।

जब नौकरी करने लगते हैं और संसार बसा लेते हैं, दिन रात मेहनत करके एक खूबसूरत ज़िंदगी बन जाती है तब लगता है जो सजाया उसका आनंद लेने का समय नहीं है।

जब बच्चे हो जाते हैं तो उनके साथ दिन कब साल में बदल जाते हैं और साल कब दशकों में बदल जाते हैं, ध्यान ही नहीं रहता। सारी जिम्मेदारियाँ निभाते-निभाते कब हम बुढ़ापे की तरफ बढ़ने लग जाते हैं पता ही नहीं चलता।

पर सोचा जाए तो, यह जीवन के चरण हमें बेहतर इंसान बनाते हैं। हमें सिखाते हैं कि कैसे मुश्किलों के वक्त हम एक दूसरे के साथ खड़े हो कर हर मुश्किल का हल निकाल सकते हैं।

हम अगर इस गुजरे हुए बचपन, यौवन और बुढ़ापे के सफर को एक संघर्ष समझे तो हमारे मन में नकारात्मकता ही बढ़ेगी। यह सोच हमें इंसानियत के धर्म को निभाने से रोकती है।

अगर सोचा जाए तो, इन सब चुनौतियों के बिना ज़िंदगी का क्या महत्व है? यही चुनौतियाँ हैं जो हमें और बेहतर बनने का अवसर देती हैं।

और जैसे-जैसे समय बीतता है हमें यह भी समझ आता है कि जो धन हमने कमाया, जिस ज़िंदगी को खूबसूरत बनाने के लिए हमने मेहनत की है, उन सब चीजों का आनंद असल में कोई और लेते हैं। इसलिए हर इंसान को अपने जीवन के दौरान पुण्य के भी काम करने चाहिए और समाज में जरूरतमंद की मदद भी करनी चाहिए। यह आनंद हमसे कोई नहीं छीन सकता।

आई.वी.लक्ष्मी,
भूतपूर्व वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी

लॉकडाउन के दिन



श्याम किशोर सिंह,
स. ले.प.अ.

जब परिस्थितियाँ विपरीत हों और समाधान अपने वश में न हो तो बेहतर यह है कि परिस्थितियों से समझौता कर लिया जाये और उसका कुछ सदुपयोग किया जाये। कुछ ऐसा ही मंजर था कोरोना लॉकडाउन के दौरान। चारों तरफ महामारी का डर, दफ्तर बंद, स्कूल-कॉलेज से चहल-पहल गायब, खेल-कूद बंद, पार्टी-फंक्शन की मस्तिायें ठप, सड़कें सूनी, बाज़ार से रौनक गायब, रोजगार के उपाय ठप। और न जाने क्या-क्या? कुल मिलाकर ज़िंदगी मानो ठहर सी गई हो। “अगर जीना चाहते हैं तो घर में रहें, सुरक्षित रहें”, हर तरफ यही नारा था। पर घर के अंदर कितने दिन बंद रहें, यह कोई नहीं जानता था। सहारा था तो बस टी.वी. और इंटरनेट का। ऐसी परिस्थिति में बढ़ते बच्चों को घर के अंदर कैसे खुश रखा जाये और समय का सही सदुपयोग कैसे किया जाये? यह एक बड़ी चुनौती थी।

इस बुरे समय की एक अच्छी बात ये थी कि घर के सभी लोगों को साथ में रहने का मौका मिला। ‘बच्चे मन के सच्चे’ ने तो अपने लिए लूडो, कैरम-बोर्ड, शतरंज, कार्ड, विडियो गेम आदि कई तरह के खेल ढूँढ लिए। अब बड़ों और बूढ़ों का क्या होगा? ये एक बड़ा सवाल था। इन सबके बीच सबसे बुरा हाल था तो घर की गृहणी/माताओं का। उनका काम बढ़ गया और उपर से कामवाली का आना बंद हो गया। उनकी 24x7 की ड्यूटी हो गई। इस स्थिति से निपटने के लिए आगे आए उनके पतिदेव और बच्चे जो घरेलू कार्यों में हाथ बंटाने लगे। हर रोज करने लगे BJP(बर्तन, झाड़ू, पोंछा)।

लॉकडाउन के समय को सकारात्मक तरीके से इस्तेमाल करने के लिए एक सुनिश्चित दिनचर्या बनाया - रोज सुबह एक घंटे योग व्यायाम (Yoga-Exercise), फिर चाय-नास्ता के बाद दो घंटे पढ़ाई, बच्चों की ऑनलाईन क्लास, उसके बाद टी.वी. सीरियल्स आदि। ऐसे समय में पुराने सीरियल्स “रामायण” और “महाभारत” का दौर भी शुरू हो गया। इससे बड़े बुजुर्गों का समय अच्छा कट जाता था। दोपहर के बाद कैरमबोर्ड, कार्ड, शतरंज, लूडो, ड्राइंग, आर्ट आदि में समय बीतने लगा। ऐसे समय में खाने-पीने के मेनू में कुछ इजाफा जरूर हुआ। बड़ी बच्चियाँ, यू-ट्यूब में देख-देख कर अपनी माताओं के साथ मिलकर अलग-अलग तरह के खाने के व्यंजन बनाती। महिलाओं ने सिलाई-बुनाई को

भी अपने समय के सदुपयोग का जरिया बनाया। दिन तो घर में कट जाता था, पर शाम का समय गुजरना मुश्किल हो जाता था। फिर, शाम के समय हम अपने घरों की छत के ऊपर ही कुछ स्थानीय खेल जैसे कितकित (Hotchsoptch), बैडमिंटन, गली क्रिकेट, पतंग उड़ाना आदि का आनंद लेने लगे पर कुछ दिनों में ही इन सबसे दिल भर गया।

यह नज़ारा था पहले लॉकडाउन का - अप्रैल-मई 2020 का। तब किसी को पता नहीं था कि कितने दिनों तक लॉकडाउन चलेगा। ऐसे समय में कुछ ऐसा करने को चाहिए था जो सकारात्मक हो, मनोरंजक हो और फायदेमंद भी। फिर मैंने विचार किया कि आज कोरोना से जो हम डरे सहमे अपने घरों में बैठे हैं, इसका एक मुख्य कारण है - प्रकृति से दूरी। जैसे-जैसे हम प्रकृति से दूर होते गए, हमारी रोग से लड़ने की ताकत कम होती गई। तो क्यों न कुछ ऐसा करें जिससे हमें प्रकृति के साथ और पेड़-पौधों के पास रहने का मौका मिले? इसके लिए एक बेहतर उपाय था - बागवानी (Gardening)।

हमारे पास कोई बड़ा बाग-बगीचा या खेत-खलिहान तो नहीं था, लेकिन हमारे अपार्टमेंट के boundary wall से लगकर 2-3 फुट चौरस गार्डन का जगह अवश्य था जहां हम थोड़ी बागवानी कर सकते थे। सबसे पहले हमने कुछ फूल के पौधे लगाए जैसे - सदाबाहर, चमेली, गुलाब, चम्पा और कुछ ऐसे फूल जिनका स्थानीय भाषा में नाम मुझे मालूम नहीं, पर बड़े खूबसूरत थे। लेकिन बागवानी से कुछ फायदे भी होने चाहिए। इसके लिए हमने कुछ ऐसे फल और सब्जियों के भी पौधे लगाए, जो छोटी जगहों पर आसानी से बढ़ सकें। सब्जियों में जैसे टमाटर, धनिया, भिंडी, बैंगन, पुदीना आदि। फलों में पपीता, अनार, केला, शरीफा और साथ में औषधीय गुण वाले कुछ पौधे जैसे - तुलसी, एलोवेरा, गिलोय, कालमेघ आदि। इस तरह से कुछ ही दिनों में हमारा बगीचा हरा-भरा हो गया। फिर बरसात के आते ही सारे पौधे लहलहाने लगे। हर नवजात छोटे-छोटे पौधे ऐसा एहसास दिलाते मानो वे छोटे-छोटे बच्चे हों। इस तरह समय भी खुशी-खुशी बीतने लगा और बार-बार बाज़ार जाने की जरूरत भी कम पड़ने लगी। कोरोना लॉकडाउन के दिनों में ये एक सकारात्मक, मनोरंजक और फायदेमंद जरिया बन गया।

इस तरह की परिस्थितियों में भी हमारी रचनात्मक सोच आनंद दिला सकती है तथा अगर हम धरती और प्रकृति से जुड़े रहें तो बीमार भी कम पड़ेंगे और समय भी खुशहाली के साथ बीतेगा।

विजयवाड़ा एक नजर में



फूल सिंह, वरि. हिंदी अनुवादक

विजयवाड़ा को दक्षिण भारत का प्रवेश द्वार कहा जा सकता है। यह कृष्णा नदी के तट पर बसा हुआ है। यहाँ की जलवायु पूरा वर्ष उष्ण रहती है। मार्च से लेकर मई तक तो यहाँ पर बहुत अधिक गर्म मौसम रहता है। यहां की चिलचिलाती धूप में घूमना आसान नहीं है। दक्षिण भारत के किसी भी कोने में भ्रमण करने हेतु यहाँ से आसानी से पहुँचा जा सकता है।

लेखापरीक्षा व लेखा हकदारी कार्यालयों का हैदराबाद से विजयवाड़ा स्थानांतरण होने पर यहां आने का अवसर मिला। सबसे पहले रविवार को कनक दुर्गा माता मंदिर में जाने का अवसर मिला। यह मंदिर एक ऊँची पहाड़ी के उपर बना हुआ है जहाँ से पूरे शहर को देखा जा सकता है। यह एक बहुत पवित्र स्थान है जहाँ पर माता दुर्गा अपने भव्य रूप में विराजमान है। यहाँ के लोगों की कनक दुर्गामाता के प्रति बहुत आस्था है। लोग अपने पारंपरिक परिधान में माता के दर्शन के लिए आते हैं। मुख्य मंदिर तक जाने के लिए बहुत ही अच्छी व्यवस्था की गई है। मुख्य मंदिर बहुत ही आकर्षक और रमणीय है। मंदिर के अंदर और बाहर भारतीय संस्कृति और कला का अनूठा संगम देखने को मिलता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि हिन्दू संस्कृति और हिन्दू धर्म को विशेषकर दक्षिण भारत के राज्यों ने सहेज कर रखा हुआ है।

माता दुर्गा मंदिर के दूसरी ओर कृष्णा नदी पर प्रकाशम बैराज बनाया गया है। यहाँ पर कृष्णा नदी के पानी को रोक कर बाँध का निर्माण किया गया है। बैराज के किनारों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। यहाँ लोग परिवार व दोस्तों सहित घूमने/सैर-सपाटे के लिए आते हैं। छुट्टियों के दिनों में तो यहाँ पर अच्छी भीड़ रहती है। यहाँ पर लोगों के लिए नौका विहार (बोटिंग) का प्रबंध भी किया गया है। साथ ही यहाँ पर छोटे बच्चों के मनोरंजन के लिए भी अच्छी व्यवस्था की गई है। रात के समय रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगाता हुआ प्रकाशम बैराज का दृश्य बहुत ही सुहावना लगता है जो यहां के वातावरण में रोमांच पैदा करता है। शहर के बीचों-बीच भी बहुत मंदिर बने हुए हैं। हर मंदिर की बनावट भारतीय स्थापत्य कला का एक अनुठा उदाहरण प्रस्तुत करती है।

प्रकाशम बैराज के साथ ही पहाड़ की चोटी पर लॉर्ड वेंकटेश्वर मंदिर भी बना हुआ है। यहाँ पर बहुत से बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं जैसा कि किसी गुरुकुल में देखने को मिलता है। यहाँ पर कई मंदिर बनाये गए हैं जिनमें अलग-2 देवी-देवताओं की मुर्तियाँ रखी गई हैं। शिक्षा प्राप्त कर रहे बच्चों के रहने-खाने व खेल-कूद की अच्छी व्यवस्था की गई है। पहाड़ की चोटी पर स्थित होने के कारण यह स्थान बहुत ही रमणीय लगता है। रात के अंधेरे में पूरा शहर रोशनी से जगमगा उठता है। कृष्णा नदी के पानी पर गिरती हुई रोशनी बहुत ही आकर्षक दृश्य प्रस्तुत करती है।

खान-पान के हिसाब से देखा जाए तो यहाँ अधिकतर होटल और रेस्टोरेंट में दक्षिण भारतीय भोजन ही परोसा जाता है। ईडली-डोसा, सांबर-वड़ा इनमें प्रमुख हैं। माँसाहारी लोगों के लिए यहाँ भोजन की कोई कमी नहीं है। शाकाहारी व्यक्तियों के लिए थोड़ी परेशानी जरूर हो सकती है। हर राज्य में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर ही खान-पान की व्यवस्था निर्भर करती है। चावल यहाँ की प्रमुख फसल है। किसी भी रेस्टोरेंट में जाएंगे तो चावल, सांबर, सब्जी के साथ आसानी से मिल जाते हैं।

हैदराबाद से स्थानांतरण के समय यह चर्चा थी कि यहाँ पर बहुत तेज गर्मी पड़ती है। यहाँ का तापमान सामान्यतः 31-38 तक रहता है व कभी कभी 41-42 डिग्री तक चला जाता है। वातावरण में आर्द्रता के कारण यहाँ पसीने वाली गर्मी रहती है जो बहुत परेशान करती है। साल भर यहाँ का मौसम गर्म ही रहता है। उत्तर भारत में जब दिसंबर-जनवरी में कड़ाके की ठंड पड़ती है तब भी यहाँ पंखा लगाकर ही सोना पड़ता है। यहाँ की मुख्य भाषा तेलगु है। जिस प्रकार से केंद्र सरकार के कार्यालय यहाँ पर स्थानांतरित हो रहे हैं यहाँ पर हिंदी के चिह्न भी देखने को मिल जाते हैं। शहर के एक तरफ कृष्णा नदी बहती है जिसमें हमेशा पानी रहता है। दूसरी ओर रेलवे ट्रैक एवं ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं जो शहर के विस्तार में एक समस्या हैं। वर्षा ऋतु में इन पहाड़ों की वनस्पति हरी-भरी हो जाती है जो बहुत सुहावनी लगती है।

विजयवाड़ा वास्तव में दक्षिण भारत के उभरते हुए शहरों में से एक है। यहाँ पर सफाई व्यवस्था भी बहुत अच्छी है। यह शहर लगातार उन्नति के नये आयामों को छू रहा है और प्रगति की ओर अग्रसर है।

खोट खोजने से बचें



विजय कुमार शुक्ल

स.ले.प.अ.

हम प्रतिदिन कई लोगों के संपर्क में आते हैं और उनसे आचार-व्यवहार भी करते हैं। कुछ लोग आपके व्यवहार की अत्यन्त प्रशंसा करते हैं तथा कुछ लोग आलोचना भी करते हैं। क्या आपने कभी यह समझने का प्रयत्न किया है कि आपका व्यवहार उन्हें क्यों अच्छा नहीं लगता ? उसका कारण है उनके प्रति आपका व्यवहार अनुकूल नहीं है तथा कहीं न कहीं आप गलती कर रहे हैं। कभी-कभी हम जाने अनजाने में दूसरों पर टीका-टिप्पणी करते हैं लेकिन जब कोई हम पर ऐसी टिप्पणी करता है तो बहुत बुरा लगता है। यहाँ पर सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात है कि कोई भी व्यक्ति अपने आप में संपूर्ण नहीं होता है। प्रत्येक के अंदर कोई न कोई कमी के साथ-साथ खुबियाँ भी हैं लेकिन किसी की भी एक कमी को देखकर उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को बुरा कहना अच्छी बात नहीं है।

इसके अतिरिक्त एक बात यह भी जरूरी है कि हमें दूसरों की कमियाँ देखने व उनकी बढ़ा-चढ़ाकर आलोचना करने से पहले अपनी कमियों के विषय में भी सोचना चाहिए। यदि हमारे अंदर कम से कम कमियाँ हों या न भी हों तो हमें किसी का अपमान करने का कोई अधिकार नहीं है। क्योंकि जीवन में कभी न कभी प्रतिकूल परिस्थितियों से सामना हर किसी का होता है और ऐसे में कोई आपसे दुःखद और अनुचित व्यवहार करे तो कितनी दुःखद और असहनीय स्थिति हो जाती है। यदि किसी में कुछ कमी भी देखें तो उसे प्रेमपूर्ण तरीके से साधारण बोलचाल की भाषा में एहसास दिलायें न कि व्यंग्यात्मक भाषा का इस्तेमाल करें। याद रखिये द्रौपदी के केवल पाँच शब्द “अंधे का पुत्र अंधा होता है” महाभारत कराने के लिए पर्याप्त थे।

यदि हम अन्य लोगों की कमियाँ ढूँढ़ते हैं तो इसका मतलब यह है कि कहीं न कहीं हमारे अंदर भी कोई कमी है जो बाहर आकर व्यंग्य कसने का काम करती है। याद रखिये हर चमकती हुई वस्तु सोना नहीं होती और हर पत्थर, पत्थर न होकर हीरा भी हो सकता है। जरूरत बस आपके दृष्टिकोण से तराशे जाने की है। एक ओर आपकी टीका-टिप्पणी किसी को हीन बना सकती है तो दूसरी ओर आपके द्वारा की गई प्रशंसा व प्रोत्साहन उसी व्यक्ति को उन्नति के शिखर पर ले जा सकती है। जब हम किसी की तरफ ऊँगली उठाते हैं तो एक ऊँगली उसकी तरफ बाकी तीन आपकी तरफ होती हैं। इसलिए दूसरों की कमियाँ देखने से पहले अपनी कमियाँ देखें। हम कोई न्यायधीश नहीं बल्कि मनुष्य हैं। अतः दूसरों में खूबियाँ और अपनी कमियाँ देखें।

बेटा विदेश में



फूल सिंह
वरि. हिंदी अनुवादक

गोपाल कालेज के अंतिम वर्ष में था। परीक्षा आरंभ होने में कुछ ही समय शेष बचा था। वह दिन-रात पढ़ाई में व्यस्त रहता था। इस बार उसने निश्चय कर रखा था कि अंतिम वर्ष की परीक्षा में वह टॉप करेगा। अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से भी उसने दूरी बना रखी थी। परिवार वाले भी उसे पढ़ाई के अलावा अन्य कार्यों से दूर रखते थे। सभी की एक ही इच्छा थी कि उनका बेटा पढ़-लिख कर अच्छी नौकरी पर लग जाए और अपने पैरों पर खड़ा हो जाए।

गोपाल के अलावा घर में उसकी दो छोटी बहने भी थी। गोपाल के पिता सरकारी स्कूल में अध्यापक थे। उसकी माता पढ़ाई-लिखाई में तो अच्छी थी लेकिन वह घर के कार्यों को ही प्राथमिकता देती थी। उसने अपनी सूझ-बूझ से परिवार को सहेज कर रखा हुआ था। पूरे गाँव में इस परिवार की चर्चा थी कि इस तरह के बच्चे मिलना सौभाग्य की बात है। गोपाल की छोटी बहने स्कूल की पढ़ाई कर रही थी वे दोनों भी हमेशा अपने स्कूल में टॉप करती थी।

गोपाल की वार्षिक परीक्षा समाप्त हो चुकी थी। उसे अब एक या दो महीने में परिणाम आने का इंतजार था। अपने खाली समय का सदुपयोग करने के लिए उसने शहर के एक प्रतिष्ठित संस्थान में कोचिंग लेना प्रारंभ कर दिया। जब भी उसे नौकरी संबंधित किसी रिक्ति की सूचना मिलती तो वह फार्म भर कर आवेदन कर देता। इस समय के दौरान उसने पूरा ध्यान पढ़ाई पर केंद्रित किया हुआ था

समय बीतता गया। गोपाल अपनी पढ़ाई/कोचिंग में व्यस्त था। आखिरकार उसका कालेज का परीक्षा परिणाम आ गया। उसने विश्वविधालय में प्रथम श्रेणी में परीक्षा पास कर ली। उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उसके माता-पिता अपने पुत्र की इस उपलब्धि पर खुशी से गदगद थे। सभी रिश्तेदारों और दोस्तों ने उन्हें इस उपलब्धि पर बधाईयाँ दी। परिवार में पूर्ण हर्षोल्लास का माहौल था।

घर में बड़ा होने के कारण गोपाल के माता पिता ने उसकी शादी करने का फैसला कर लिया। लेकिन गोपाल चाहता था कि वह नौकरी लग जाए उसके बाद ही शादी के बारे में सोचेगा। गोपाल के माता-पिता का विचार था कि अगर गोपाल की शादी हो जाती है तो

उसके बाद वे अपनी दोनों बेटियों की भी शादी कर देंगे। उनकी दोनों बेटियाँ भी अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी कर चुकी थी। लेकिन गोपाल के मन में कुछ और ही चल रहा था। घरवाले उसके इरादे को भाँप नहीं पा रहे थे।

एक दिन गोपाल के पास कालेज से फोन आया और यह बताया कि मल्टीनेशनल कंपनियाँ कालेज के प्रांगण में रोजगार शिविर लगा रही हैं। अगर वह नौकरी पाने का इच्छुक है तो इस शिविर में भाग ले सकता है। गोपाल ने इस संबंध में माता-पिता को सूचित किया और शिविर में चला गया। सौभाग्य से एक मल्टीनेशनल कंपनी में उसका चयन हो गया और एक अच्छी-खासी नौकरी मिलने के साथ-साथ उसे विदेश जाने का मौका मिल गया। शाम को घर पहुँचकर उसने सारी बात अपने माता-पिता को सुनाई तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह अपने पुत्र की इस उपलब्धि पर गौरव महसूस कर रहे थे।

कंपनी द्वारा सामान्य औपचारिकताएं पूरी करने पश्चात गोपाल नौकरी करने विदेश चला गया। उसकी आकांक्षा थी कि मैं विदेश जाकर बहुत पैसा कमाऊँ और अपने माता-पिता को खुश रख सकूँ। वहाँ की चकाचौंध से वह बहुत प्रभावित हुआ। विदेश में सैटल होने के बाद वह अच्छा पैसा कमाने लगा। उसने हर महीने अपने माता-पिता के पास अच्छा पैसा भेजना शुरू कर दिया और अपना भी अच्छा बैंक बैलेंस तैयार कर लिया।

इसी समय गोपाल के माता-पिता ने एक सुव्यवस्थित परिवार में अपनी दोनों बेटियों की शादी कर दी। अपनी दोनों बेटियों की शादी कर वह निश्चिंत होकर अपना जीवन-यापन करने लगे। उनकी दोनों बेटियाँ अपने माता-पिता से मिलने आती रहती थी लेकिन अपने भाई को लेकर उनके जो अरमान थे, उस बारे में सोचकर वे उदास हो जाती थी। गोपाल यदा-कदा अपने माता-पिता व बहनों से फोन पर बात कर लेता था। जब कभी भी भारत वापस आने के बारे में चर्चा होती तो वह बात को टाल जाता था। इसी तरह जिंदगी के कई वर्ष बीत गए।

समय के साथ-2 गोपाल के माता-पिता वृद्ध होते जा रहे थे। रहन-सहन और खान-पान की कोई कमी न थी। परंतु एक ही सोच उन्हें दिन-रात सता रही थी कि अपने जीते जी हम गोपाल की शादी कर जाएं जो हर माता-पिता का सपना होता है। लेकिन गोपाल हमेशा शादी के नाम से ही दूर भागता था और यह कहकर चुप हो जाता था कि उपयुक्त समय आने पर वह शादी कर लेगा।

कुछ वर्ष बीतने और अच्छी तरह से सैटल होने के बाद गोपाल ने विदेश में अपना घर ले लिया। जीवन-यापन के लिए हर सुख-सुविधा उसके पास थी। समय आने पर उसने विदेश में ही अपनी पसंद की लड़की से शादी कर ली और अपनी जिंदगी में व्यस्त हो गया। दोनों अपनी नौकरी से अच्छा पैसा कमा कर खुशनुमा जिंदगी जी रहे थे।

एक दिन शाम को पार्क में टहलते-टहलते गोपाल की पत्नी ने पूछा कि आपके माता-पिता से मिलने भारत चलते हैं। पहले तो एकदम से उसने इनकार कर दिया लेकिन पत्नी की जिद के आगे उसने माता-पिता से मिलने के लिए हॉ कर दी। उन्होंने अपनी फ्लाईट की टिकट बुक की और तय दिन पर भारत लौट आए। गोपाल ने अपने आने की सूचना माता-पिता को नहीं दी थी। वह सीधा ही पत्नी को लेकर घर पहुँच गया। वह जब घर के गेट के पास पहुँचा तो उसने अपनी माँ को आवाज लगाई लेकिन अंदर से कोई आवाज नहीं आई। फिर उसने घर के मुख्य हॉल में प्रवेश किया तो वह वहाँ का दृश्य देखकर अवाक रह गया। गोपाल की माँ अपने पति के सिर को सहला रही थी। उसके पिता के मुँह से केवल एक ही आवाज बार-बार आ रही थी “गोपाल-गोपाल-----गोपाल”। उसकी माँ गोपाल को देखते ही आश्चर्यचकित हो गई। वह रुंधे गले से गोपाल के पिता से बोली, “देखो, आपका गोपाल आ गया है, आँखें खोलो”। उसने गोपाल के पिता को हिलाया लेकिन परिस्थिति को कुछ और ही मंजूर था। गोपाल भी उनके सामने बैठ गया और पापा-पापा कहने लगा। लेकिन शायद अब बहुत देर हो चुकी थी।

गोपाल के पिता इस दुनिया को अलविदा कह चुके थे। गोपाल की माँ का रो-रोकर बुरा हाल था। गोपाल की पत्नी भी इस दृश्य को देखकर हतप्रभ रह गई। उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। इसी बीच सभी रीति-रिवाजों को पूरा करने के बाद सभी रिश्तेदार भी जा चुके थे। गोपाल की बहनें भी कुछ दिन रुकी व अपने भाई और भाभी से मिलकर बहुत खुश हुईं। कुछ दिन भारत में रुकने के बाद गोपाल अपनी माँ व पत्नी के साथ फिर से विदेश चला गया।

हमारे समाज में इस तरह की परिस्थितियाँ सामान्य रूप में देखने को मिल जाती हैं लेकिन संतान को यह नहीं भूलना चाहिये कि जिस माता-पिता के संरक्षण में रहकर हम

सफलता के मुकाम तक पहुँचते हैं हमें कभी भी उनका दिल नहीं दुखाना चाहिये। हमें माता-पिता की भावनाओं का सम्मान करना चाहिये और जब कभी भी उन्हें हमारी आवश्यकता पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिये। माता-पिता के रूप में भगवान हमेशा हमारे साथ रहते हैं और हमारे लिए पूजनीय हैं। जिसने अपने माता-पिता की सेवा कर ली उसने समझो भगवान को प्राप्त कर लिया।

प्रधान महालेखाकर महोदया राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए



संयुक्त हिंदी दिवस-2021 की कुछ झलकियाँ



श्री केशवन श्रीनिवासन, उप-नियंत्रक महालेखापरीक्षक का कार्यालय परिसर में आगमन



श्री जितेंद्रनाथ शर्मा, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) कार्यालय के स्थानांतरण में विशिष्ट योगदान देने वाले अधिकारियों कर्मचारियों को पुरस्कृत करते हुए।



कार्यालय में मनोरंजन क्लब के उद्घाटन की कुछ झलकियाँ



कार्यालय में आयोजित आँखों का निःशुल्क जाँच शिविर और कैंसर रोग विशेषज्ञ द्वारा जानकारी प्रदान करना।



विशाखापट्टनम में आयोजित पेंशन अदालत



कैरम टूर्नामेंट के विजेताओं के साथ प्रधान महालेखाकार एव वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)



गणतंत्र दिवस-2022 के अवसर पर कार्यालय में ध्वजारोहण



अगर आप सोचते हैं कि



विजय कुमार शुक्ला,
स.ले.प.अ.

अगर आप सोचते हैं कि आप हार गये हैं

तो आप हार गये हैं।

अगर आप सोचते हैं कि आप में हौसला नहीं

तो सचमुच नहीं है।

अगर आप जीतना चाहते हैं मगर

सोचते हैं कि जीत नहीं सकते

तो आप सचमुच जीत नहीं सकते।

अगर आप सोचते हैं कि आप हार जायेंगे

तो आप हार चुके हैं।

क्योंकि हम दुनिया में देखते हैं

कि सफलता की शुरुआत इन्सान की इच्छा से होती है

ये सब कुछ उसकी सोच पर निर्भर करता है।

अगर आप सोचते हैं कि आप पिछड़ गये हैं

तो आप पिछड़ गये हैं।

तरक्की करने के लिए आपको अपनी सोच ऊँची करनी पड़ेगी। कोई भी सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अपने प्रति विश्वास पैदा करना होगा क्योंकि जीवन की लड़ाईयाँ हमेशा सिर्फ तेज और मजबूत लोग ही नहीं जीतते बल्कि आज नहीं तो कल जीतता वही है जिसे विश्वास है कि वह जीतेगा। दुनिया में कुछ भी Impossible नहीं है क्योंकि
Impossible itself says I am possible.

कुछ प्रेरणादायक वाक्य



विजय कुमार शुक्ला,
स.ले.प.अ.

1. मुश्किलों से हार जाए वो नहीं है जिन्दगी
जिसको मौत मार जाए वो नहीं जिन्दगी
आने वाली नस्ल युगों तक तुम्हें नमन करे
ऐसा कुछ करो तो कहें है गुजारी जिन्दगी
2. रात तो वक्त की पाबंद है टल जायेगी,
देखना ये है कि चिरागों का सफर कितना है।
3. अब तो हवायें ही करेंगी रोशनी का फैसला,
जिस दीये में तेल होगा बस वही रह जाएगा।
4. कोई जागे या न जागे ये मुकद्दर उसका,
आपका फर्ज है आवाज लगाते रहिए।
5. खुदा को है पसंद नहीं सख्ती जुबान में,
इसीलिए तो दी नहीं हड्डी जुबान में।
6. कौन सी बात कब कही जाती है,
यह सलीका हो तो हर बात सुनी जाती है।
7. धन यदि गया, गया नहीं कुछ भी,
स्वास्थ्य गया, कुछ जाता है।
सदाचार यदि गया मनुज का
सबकुछ ही लुट जाता है।

8. मुश्किलें दिल के इरादे को आजमाती हैं,
स्वप्न के परदे निगाहों से हटाती हैं।
हौसला मत हार गिरकर ओ मुसाफिर,
ठोकरें इंसान को चलना सीखाती हैं।
9. शक्ल तो जैसी है वैसी ही नजर आयेगी,
आप आइना बदलते हैं तो बदलते रहिए।
10. बेवफा की महफिल में दिल की बात क्या कहिए,
खैरियत इसी में खुद को बेवफा कहिए।

FIVE KEYS TO HAPPINESS

KEY#1 - BE TRUE TO YOUR HEART

KEY#2- KEEP YOUR MIND FREE FROM WAR?

KEY#3- LIVE SIMPLY (Don't show what you are not)

Key#4- EXPECT LITTLE FROM LIFE MORE FROM YOURSELF

KEY#5- BE TOTAL (Do anything then do it totally)

इतिहास की परीक्षा



गीताँजलि कुमारी
लेखाकार

यकीन कीजिए, मैं नहीं करती हूँ चीट,
इत्तेफाक से पड़ जाती है कोने में मेरी सीट।

पढ़ने के दिनों में पढ़ती हूँ नूतन कहानियाँ,
परीक्षा भवन में चाहिए, बस शिक्षकों की मेहरबानियाँ।
परीक्षा में, बगल में झाँकने के सिवा उपाय नहीं दूजा,
इसलिए कर लिया करती हूँ, हर साल सरस्वती -पूजा।

इतिहास की परीक्षा थी उस दिन, बायाँ नयन फड़कता था,
सोच परीक्षा की बात, मेरा दिल धड़कता था।

सब बातों को यूँही छोड़, जैसे पहुँची परीक्षा-भवन,
चारों ओर की शांति देखी, गेट को किया स्व-नमन।
चपरासी ने मुझे बताया- तुम दस मिनट को लेट आई,
आव देखा न ताव देखा, कक्षा के अंदर गई।

देखा पेपर तो सब भूल गई, चक्कर आया सिर घूम गया,
सहसा मन में एक बिजली कौंधी, कॉपी पर मेरी पेन चली।
लिख दिया----

अकबर का बेटा बाबर, बाबर का बेटा जहाँगीर,
तुलसी थे शिष्य होनहार, गुरु ठहरे संत कबीर।
दिल्ली में है ताजमहल, आगरा में है चार-मीनार,
यू.पी. में है पटियाला, जयपुर का है कुतुब-मीनार।

खिलज़ी के है करम निराले, जग-जग ज्योति जलायी थी,
गौरी ने चौहान को रण में दो बार हराया था।

अंत में लिख दिया- इतिहास की बात न कोई सच्ची है,
इसको पढ़ना तो व्यर्थ ही माथा-पच्ची है।

हो गये परीक्षक पागल, मेरी कॉपी देख-देख,
लिख दिया सब बच्चों में होनहार है यहीं एक।

पर ना जाने क्यूँ मेरे साथ ही, यह अन्याय किया,
जीरों नंबर देकर, बाकी नंबर काट लिये।

पथ के हमराही



गीताँजलि कुमारी
लेखाकार

ओ। पथ के हमराही,
मेरे साथ चल, मेरे साथ चल।

वीरान डगर, सुनसान नगर,
जलती धरती, तपता दिनकर।
छुपे हैं पंछी नीड़ के अंदर,
हूँ मैं, पथ का भटका राही,
साथ चल, मेरे साथ चल।

क्षण-क्षण ये बीता जाये,
पल- पल ये कहता जाये।
दूर तलक मंजिल तेरी,
सुन प्यारे। एक बात मेरी
जिद छोड़, कदम तू मोड़ ले,
सुख से दामन को जोड़ ले।

पर है मेरा दृढ़ संकल्प
क्यूँ तोड़ूँ विश्वास अटल
हूँ पथ का मैं अविचल राही
साथ चल, मेरे साथ चल।
रात गई, प्रभात हुआ,
हृदय को एक तरंग हुआ।
मिली मंजिल, पर थके हैं पाँव
फिर भी हर्षोल्लास हुआ
देख पथिक। ओ पथ के राही
साथ चल, मेरे साथ चल।

हरा पत्ता



शशांक सिंह
लेखाकार

उस हरे-भरे पेड़ की एक डाली,
न जाने कैसे सूख गयी थी,
उसके फूल मुरझा से गये थे
पत्ते पीले पड़ रहे थे।
अब हलकी-सी हवा भी
उन्हे तोड़ के गिरा दे रही थी
जो कभी तेज तूफानों में भी खड़े रहते थे।
देखो...पूरी जमीन बिछी पड़ी है, उन्ही से-
हारे, धिक्कारे पड़े हैं, बेज़ान से,
हवाओं के साथ, कभी इधर-कभी उधर,
.....बस सरक रहे हैं।

जो कभी, उड़ते पंक्षियों को अपने पास बिठाते थे,
धूप में ठंडी छाँव बन के, आ जाते थे,
आज अपने ही वजूद तले, बिखरे पड़े हैं,
और अपनी ही छाँव में, जल रहे हैं।

उपर से, वो हरे पत्ते, उनको धूल बनते देखते.

और एक-एक करके, वक्त-वक्त पे गिरते,

और उन्ही में मिल जाते।

उसी ढेर से, मैंने एक सूखे पत्ते को उठा लिया,

अब वो उन हरे पत्तों जैसा कोमल नहीं, कठोर था,

वक्त की आँधियों को झेला, धूप में तपा जो था।

अब उसका सूखापन, लुभाता तो नहीं,

पर हाँ -इस सतरंगी दुनियां का, इक स्याह-सा रंग दिखाता है,

जो न जाने कितनी जिंदगियों में छिपा हुआ है

और इक-इक करके, हरे-भरे पत्तों को मुरझा रहा है।

पर्वतों से आगे



शंशाक सिंह
लेखाकार

जो पर्वतों से आगे, कोई रास्ता होता,
तुम भी मेरे साथ-साथ...
चल दिये होते।
जो सामने कही भी, कोई मुकाम होता,
तुम भी मेरे साथ-साथ...
चल दिये होते।
जो सोचते, बिछड़ने का जरा भी खयाल आता
मेरी उगलियों को पकड़ कर,
तुम चले गये होते...
जो टूटता ख्वाब, खुली आंखों का तेरे,
मेरी नजर पे...
तुम कहीं दूर खड़े होते।
जब उमड़ते भँवर, समंदर के किनारे
अपने कदमों के निशाँ, तुम छोड़ दिये होते।
जो जिंदगी में फिर से मुस्कुराना चाहते,
अपने गमों को तुम कहीं छोड़ दिये होते।
तुम भी मेरे साथ-साथ....
चल दिये होते।।

युद्ध

युद्ध क्या है.....युद्ध क्या है.....

क्षतिग्रस्त हुई सुनसान इमारतें
या चहकते आँगन का अब सूनापन
या वीरान घर में यादों को खोजता शख्स
या मृत के साथ पड़ी उसकी रक्षा की ताबीज

युद्ध क्या है.....युद्ध क्या है.....

किसी के अहंकार से निकली चिंगारी
या रौद्र अग्नि में घिरे पंछियों के घरोंदे
या लहलहाते मैदानों का मरघट हो जाना
या फिर किसी विकसित सभ्यता का पतन

युद्ध क्या है.....युद्ध क्या है.....

बदले की भावना में झुलसते मासूम
या रक्त से लाल हुई शहरों की सड़कें
या नरसंहार के लिए तैयार गोला बारूद
या आत्म सम्मान में किये गए बलिदान

युद्ध क्या है.....युद्ध क्या है.....

दिन रात बमबरो के गड़गड़ाहट की आवाज
या कई रातों से आँखों में नींद लिए सैनिक
या आसमान में मंडराते हुए ढेरों चील
या बिना पहचान की गयी अनगिनत लाशें

युद्ध क्या है.....युद्ध क्या है.....

आखिर इसमें क्या है. और आखिर ये क्यों है।



चंद्रपाल वर्मा
लेखाकार

कोरोना - तेरी हस्ती हम मिटायेंगे



श्याम किशोर सिंह
स.ले.प.अ.

कोरोना रे कोरोना.....

तेरी हस्ती हम मिटायेंगे, कोरोना रे कोरोना

तुने बीमारी फैलाया,

सबको बहुत सताया,

अब तेरा करके बंटाधार,

तुझको कर देंगे बेकार, कोरोना रे कोरोना....

तु पिशाच बनकर आया,

सबको बहुत डराया,

कर दी सड़कें गलियाँ सूनी,

बाजार की रौनक छीनी,

स्कूल कालेज बंद,

और काम धंधा बंद,

हुए लोग बेरोजगार-----कोरोना रे कोरोना---

मुँह पर पट्टा लगवाया,

हार्थों को भी धुलवाया

सैनिटाइजर खूब लगवाया,

फिर भी अस्पताल हमें पहुँचाया,

कर दिया सबको घरों में बंद

कोरोना रे कोरोना.....

तन की ताकत बढ़ायेंगे,

दूरी को हम बढ़ायेगें

वैक्सीन भी लगवाएंगे

पर तुझको दूर भगाएंगे....

अब तेरा करके बंटाधार

तुझको कर देंगे बेकार

कोरोना रे कोरोना.....

तेरी हस्ती हम मिटायेंगे।

सरहद के योद्धा



चंद्रपाल वर्मा
लेखाकार

वतन पर मिटते योद्धाओं की, हस्तियां ना पूछो,
सरहद पर खड़ा निडर सिंह की तरह, वो शख्स कौन है,
गुमान करती सियाचिन की बर्फीली वादियों से पूछो,
अतुल्य, अभेद हिमालय को पगों से नाप दिया जिसने,
उन पद चिन्हों की पहचान, हिमालय की चोटियों से पूछो।

वतन की मिट्टी से किस कदर मोहहबत है इन को,
हर वक्त जलती अमर जवान ज्योति से इनकी दास्तान पूछो,
जायेगा दूजा बेटा भी फौज में गर्व से कहती शहीद की माँ
योद्धाओ को जन्म देती इन माँओं से, देशभक्ति की बात न पूछो।

लहू के चन्द कतरों को देख खौफ से डर जाते हैं लोग
लहू लुहान लाशों के बीच लड़ते वीर की वीरता, युद्ध से पूछो
अगर किसी तरह अभी भी लगे उसकी पहचान में कमी
तो जाओ और उसके खौफ से थर्राते, दुश्मनों के सीने से पूछो
वतन पर मिटते योद्धाओं की, हस्तियां ना पूछो

‘बचपन बिन बचपन’



सौरभ तोमर
डी.ई.ओ

नवंबर छोड़ गया कच्चे बेरों से भरी झाड़ियाँ,
अजीब बात है बच्चे नहीं जानते खेत का रास्ता
पता नहीं उनका उतावलापन कहाँ गया
वे इतने बूढ़े क्यों हुए एक दम
कि कच्चा खाने की उन्हें कोई जल्दी नहीं ?

नवंबर छोड़ गया वो अंजान घर से लाना गुलाब की कलम
खेत के कोनों में सिमट गयी वो अधकचरे अमरूद से लथपथ टहनी
इन्हें भर जाना था शर्ट की गांठ लगी बाजुओं में
पर सड़कर मिट्टी में मिल रहे हैं
मेरे बच्चों तुम इतने व्यस्त क्यों हो ?

नवंबर छोड़ गया शहतूत की झंगड़ाई
जिन्हे तय करनी थी खेत और घर की दूरी
बैठा बचपन की पीठ पर
मेरे धरती के खेलौनों तुम इतना शांत क्यों हो
कि कोई झोल तुम्हें नहीं खींचती ?

नवंबर छोड़ गया पशुओं की खोर में कटे गन्ने
जिन्हे चुग लेना था नन्हीं मुठ्ठियों ने
अरे बच्चों कहाँ हो सब
क्या तुम्हें अब कोई मिठास नहीं लुभाती ?

सुनो रे आदमी के बंगलों के खूबसूरत फूल
नवंबर छोड़ गया कच्ची सरसों की डंठल
शलजम से भरी खेत की किनारी, चने की हरी कॉपल
तुम इस दिसंबर संभाल लेना सब कुछ
बूढ़े होते किसान कब तक खेत संभालेंगे अब ?

अभिलाषा



प्रियंका
डी.ई.ओ

तुम शहर से ऊबे नहीं क्या?
मैं बिल्कुल ऊब चुकी हूँ।
मुझे जल्दबाजी में भागते लोग बिल्कुल पंसद नहीं,
मैं खुद नहीं चाहती मुझे जल्दी हो कहीं जाने की,
मैं फुर्सत चाहती हूँ।
खाली खेतों में पेड़ों पर लटकती सारिवा सुलझाने की फुर्सत,
मैं तार-तार खींचती ही रहूँ,
मुझे भाता नहीं शहर का हार्न,
मैं पक्षियों की चहचाहट से उठना चाहती हूँ।
इतनी फुर्सत कि सुबह से शाम तक,
पेड़ पर बैठती-उड़ती गौरैया देखती रहूँ,
नीम के नीचे बैठकर देखती रहूँ,
धूप का आना, परछाई का बड़ा होना,
रात की रानी का दिन में मुरझाना,
और रात को खिलखिला उठना,
मैं चलना चाहती हूँ इधर-उधर उछलती कूदती,
किसी फुटपाथ, जैब्रा क्रॉसिंग से दूर,
खेतों के बीच कच्चे रस्तों पर,
जहाँ मेरे पैरों की थाप से धूल उड़े,
मैं खेतों में अधिकचरे अमरूद, शहतूत और जामुन से,
फिर झोली भरना चाहती हूँ।
अनजान पेड़ों की बकबकी पत्तियाँ चबाकर,
फिर मुँह बिचकाना चाहती हूँ,
सुन! शहर बेदखल कर दे मुझे,
मैं गाँव में बस जाना चाहती हूँ।

जिंदगी



(जितेंद्र नाथ शर्मा)

वरिष्ठ उपमहालेखाकार(प्रशासन)

जिंदगी की कसौटी से
हर रिश्ता गुजर गया
कुछ निकले खरे सोने जैसे
कुछ का पानी उतर गया।

मिले थे उनसे शौक से यूँ
कि बदल जाएगी जिंदगी
वो शतरंज की चाल चलते रहे
और मैं मात खाता चला गया।

हारा नहीं फिर भी पथ से
विश्वास था मुझे अपने रब पे
ठोकरें खाता रहा
मंजिल पे बढ़ता चला गया।

सावन भी हरे देखे
पतझड़ सी जिंदगी में
वो मुस्कुराता चेहरा
कभी न निकला मेरे मन से
बुलबुला सा ख्याल था
बस आता ही चला गया।

इंतजार है आँखों को
कि आज भी कहीं मिलोगे
सिमट जाओगे हमसे
और रो-रोकर मिलोगे
बिखरते हुए सपनों को
बस समेटता चला गया।

उलझने तो और भी थी
उनकी यादों के सिवा
जिंदगी जीने का नाम है
यही सोच कर जीता चला गया।
जिंदगी की कसौटी से
हर रिश्ता गुजर गया
कुछ निकले खरे सोने जैसे
कुछ का पानी उतर गया।



(जितेंद्रनाथ शर्मा)

वरि. उपमहालेखाकार(प्रशासन)

खुश रहना

खुश रहना तुम सीखो बंधु
खुशी से बढ़कर कुछ नहीं
आफत को दावत देने वालो
समझो दुख में सुख नहीं।

मिला करो हँस कर सभी से
क्या तुम्हारा घिस जाएगा
दुख के पापड़ हमने भी बेले
पर घिसा हमारा कुछ नहीं।

ये सीख मिली हमें जिंदगी से
सभी इंसा तो नेक नहीं
नेकी कर दरिया में फेंक
फिर यह कहावत सत्य नहीं।

कोई नहीं परिभाषा सुख की
ये तो मन का भाव है
मुँह लटकाकर बैठे रहो
ये कैसा तनाव है।

क्या जाएगा बंधु तेरा
जो हर घड़ी मुस्कुरायेगा
खिलखिलाकर हर दुख झेलो
ये पास कभी न आएगा

शहर में गर तुम भटक गए हो
तो गाँव का तुम रास्ता देखो
मोटे बिस्तर भी कम पड़ जाए
माँ के आँचल जैसा सुख नहीं।

भ्रम में क्यों जीते हैं “शर्मा”
ये भूल कर सब बैठे हैं
माता-पिता से बढ़ कर के
इस संसार में ऐसा सुख नहीं
खुश रहना तुम सीखो बंधु
खुशी से बढ़कर कुछ नहीं।

हिंदी के सामान्य मुहावरे

हिंदी के मुहावरे, बड़े ही बावरे हैं,

खाने पीने की चीजों से भरे हैं...

कहीं पर फल है तो कहीं आटा-दालें हैं,

कहीं पर मिठाई है, कहीं पर मसाले हैं ,

चलो, फलों से ही शुरू कर लेते हैं,

एक एक कर सबके मजे लेते हैं...

आम के आम और गुठलियों के भी दाम मिलते हैं,

तो कभी आम खाओ गुठलियाँ मत गिनो ,

कभी अंगूर खट्टे हैं,

कभी खरबूजे, खरबूजे को देख कर रंग बदलते हैं,

कहीं दाल में काला है,

तो कहीं किसी की दाल ही नहीं गलती है,

कोई डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाता है,

तो कोई लोहे के चने चबाता है,

कोई घर बैठा रोटियां तोड़ता है,

कोई दाल भात में मूसरचंद बन जाता है,

मुफलिसी में जब आटा गीला होता है,

तो आटे दाल का भाव मालूम पड़ जाता है,

सफलता के लिए कई पापड़ बेलने पड़ते हैं

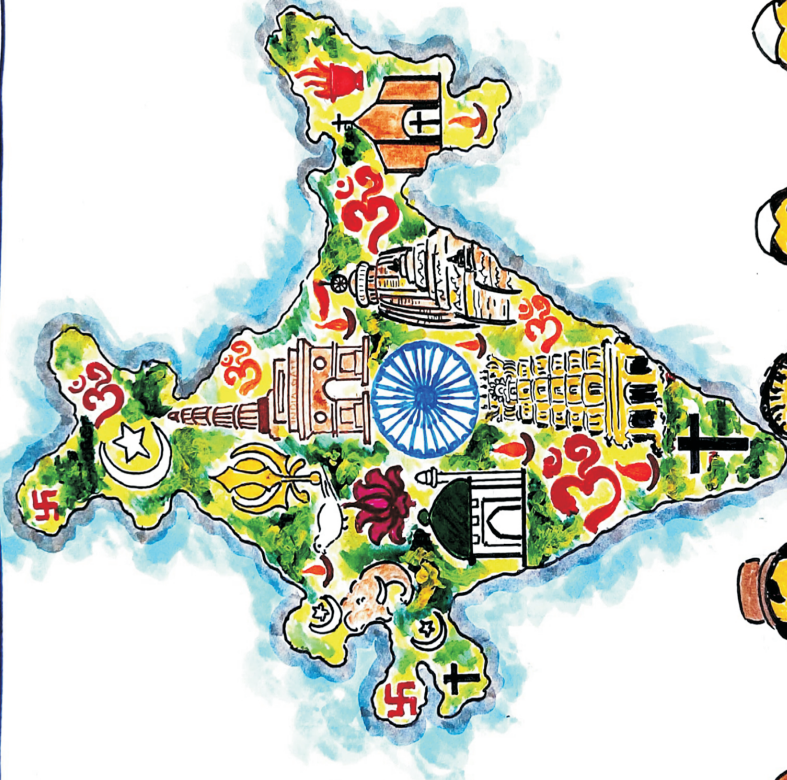
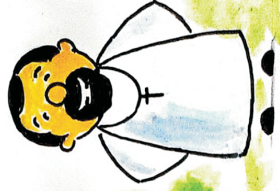
आटे में नमक तो चल जाता है,
पर गेंहू के साथ, घुन भी पिस जाता है,
अपना हाल तो बेहाल है, ये मुंह और मसूर की दाल है,
गुड़ खाते हैं और गुलगुले से परहेज करते हैं,
और कभी गुड़ का गोबर कर बैठते हैं,
कभी तिल का ताड़, कभी राई का पहाड़ बनता है,
कभी ऊँट के मुंह में जीरा है,
कभी कोई जले पर नमक छिड़कता है,
किसी के दांत दूध के हैं,
तो कई दूध के धुले हैं,
कोई जामुन के रंग सी चमड़ी पा के रोई है,
तो किसी की चमड़ी जैसे मैदे की लोई है,
किसी को छटी का दूध याद आ जाता है,
दूध का जला छाछ को भी फूंक फूंक पीता है,
और दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है,
शादी बूरे के लड्डू हैं, जिसने खाए वो भी पछताए,
और जिसने नहीं खाए, वो भी पछताते हैं,
पर शादी की बात सुन, मन में लड्डू फूटते हैं,
और शादी के बाद, दोनों हाथों में लड्डू आते हैं,

कोई जलेबी की तरह सीधा है, कोई टेढ़ी खीर है,
किसी के मुंह में घी शक्कर है, सबकी अपनी अपनी तकदीर है...
कभी कोई चाय-पानी करवाता है,
कोई मखखन लगाता है
और जब छप्पर फाड़ कर कुछ मिलता है,
तो सभी के मुंह में पानी आ जाता है,
भाई साहब अब कुछ भी हो,
घी तो खिचड़ी में ही जाता है,
जितने मुंह हैं, उतनी बातें हैं,
सब अपनी-अपनी बीन बजाते हैं,
पर नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है,
सभी बहरे हैं, बावरें हैं
ये सब हिंदी के मुहावरें हैं...
ये ग़ज़ब मुहावरे नहीं बुजुर्गों के अनुभवों की खान हैं...
सच पूछो तो हिन्दी भाषा की जान हैं...

Accord approval to	कृपया .. को अनुमोदित करें
Admissibility of claim	दावे की स्वीकार्यता
Advise accordingly	तदनुसार सलाह दें
Agenda is sent here with	कार्यसूची साथ भेजी जा रही है
Approval may be accorded	अनुमोदन प्रदान कर दिया जाए
Attached herewith	इसके साथ संलग्न
Bring into notice	ध्यान में लाना
Balance amount of D.C.R.G. Pension	मृत्यु तथा सेवानिवृत्ति उपदान पेंशन की शेष राशि
Charge handed over	कार्यभार सौंप दिया
Competent authority's sanction is necessary	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है
Copy forwarded are information /necessary action	सूचना/आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रतिलिपि अग्रेषित
Disposal of cases	मामलों का निपटारा
In compliance with	का पालन करते हुए
In public interest	लोकहित में
Kindly expedite disposal	कृपया शीघ्र निपटान करें
May be passed for payment	भुगतान के लिए पास करें
Net qualifying service	निवल अर्हक सेवा
No objection certificate	अनापत्ति प्रमाण-पत्र
On grounds of	के आधार पर
On the compassionate grounds	अनुकम्पा के आधार पर
Passed for payment	भुगतान के लिए पास किया
Please treat this as strictly confidential	इसे सर्वथा गोपनीय समझें
Put up for perusal please	अवलोकनार्थ प्रस्तुत
Sanction of the competent authority may be obtained	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी ली जाए
Settlement of pension claims	पेंशन दावे का निपटारा
Should be given top priority	परम अग्रता दी जाए
Subject to condition that	इस शर्त पर कि
Take over charge	कार्यभार ग्रहण करना
The proposal is quite in order	यह प्रस्ताव बिल्कुल नियमानुकूल है
This is to inform	यह सूचना दी जाती है
With respect to	के संबंध में
With retrospective effect	पूर्वव्यापी प्रभाव सहित

राष्ट्रीय एकता

एकता में ही संवल है, हर मुकिल को दूर करना संभव है.



BY K. SRINIVAS ACHARY
14.09.2021

